संगीत कला एवं सौन्दर्यानुभूति

डॉ0 किरन शर्मा

प्रवक्ता, संगीत विभाग, आर0जी0 (पी0जी0) कॉलिज, मेरठ।

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 किरन शर्मा,

संगीत कला एवं सौन्दर्यानुभूति,

Artistic Narration 2018, Vol. IX, No.1, pp.16-20

http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

सौन्दर्य सभी ललित कलाओं का नैसर्गिक गुण है। प्राचीन काल से ही मनुष्य ललित कलाओं के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति करता रहा है। सभी ललित कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। शब्दों के अभाव में भी मात्र स्वरों के विशिष्ट संयोजन से ही संगीत में सौन्दर्याभिव्यक्ति संभव है। भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से ही संगीत का अध्यात्म से गहन संबंध रहा है। संगीत को स्वयं ईश्वर से संबन्धित बताया गया है। संगीत का आधार "नाद" है। इसे ही "नाद ब्रह्म" कहा गया है। प्राचीन भारतीय परंपरा में संगीत का स्वरूप आध्यात्मिक होने के कारण ही इसे मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था। संगीत में आहत नाद का प्रयोग होता है। इसे ही संगीतोपयोगी नाद कहा गया है। संगीतोपयोगी नाद मात्र ध्वनि नहीं है बल्कि नियमित एवं स्थिर आंदोलन संख्या वाली मधुर ध्वनि है। नाद से श्रुति, श्रुति से स्वर तथा स्वर के विशिष्ट संयोजन से राग की उत्पत्ति होती है। स्वर का विशिष्ट गुण है "रंज्जकता"। स्वर रंज्जक होने का कारण स्वतः ही आनंदमयी होते है। यह स्वर ही राग संगीत का स्रोत है, अतः हम देखते है की संगीत कला की नींव ही सौंदर्य तत्व पर आधारित है। स्वर, लय, ताल का विशिष्ट संयोजन ही संगीत में सौन्दर्य की उत्पत्ति का आधार है। ऋग्वेद में सौन्दर्य को "श्री" कहा गया है। इसके अलावा कान्त, मनोरमं, रुचिरं, ललित, दिव्य आदि शब्दों का उल्लेख भी मिलता है। अंग्रेजी में इसे "Beauty" कहा गया है। ललित कलाओं में निहित सौन्दर्य का सैद्धांतिक विश्लेषण करने हेतु ही इसे एक शास्त्र के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए सौन्दर्य शास्त्र (Aesthetics) कहा गया।

भारतीय कला सौन्दर्य परंपरा मूलतः अध्यात्मिक होने के कारण सत्यं, शिवम, सुंदरम की अवधारणा पर आधारित है जो स्वयं में कलयाणकारी तथा आनंदमयी है।

मुख्य शब्द—*सौन्दर्य, संगीत, कला, भारतीय, परंपरा, अवधारणा, रस*

सौंदर्य एक ईश्वरीय गुण है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा है:– विश्व के समस्त सौन्दर्य में मेरा ही तेज विद्यमान है। ललित कलाएँ मनुष्य की नैसर्गिक सौन्दर्याभिव्यक्ति का आधार है। समस्त कलाओं की अभिव्यक्ति का प्रेरणा स्रोत मनुष्य की सौन्दर्यप्रियता ही है। ललित कलाएँ मनुष्य की सौन्दर्य चेतना की प्रतीक है। सभी ललित कलाओं में अभिव्यक्ति के माध्यम की सूक्ष्मता के आधार पर संगीत को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। संगीत कला का सौंदर्य दिव्य है जहाँ संगीत है, वहाँ ईश्वर का वास है। भारतीय संगीत का आधार नाद है, जिसे नाद ब्रह्म की संज्ञा दी गयी है यही अदिनाद 'ऊँ' सम्पूर्ण ब्रहमॉड में व्याप्त है। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय परम्परा में संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था।

संगीत शास्त्रों में ब्रह्मा की प्राप्ति के लिये नादोपासना का मार्ग बताया गया है तथा इस सम्पूर्ण सृष्टि को ही 'नादात्मक' कहा गया है:–

''न नादेन बिना गीत न नादेन बिना स्वराः ।
न नादेन बिना नृत तस्मान्नादात्मंक जगत्।।
नादरूपोः स्मृतो ब्रह्मा नादरूपो जनार्दनः।
नादरूपा पराशक्तिर्नादरूपो महेश्वरः ।।

नाद से ही श्रुति तथा श्रुति से स्वर की उत्पत्ति हुई है। स्वरों के विशिष्ट–संयोजन से राग का सृजन होता है। संगीत ग्रंथों में स्वर के लिए ''श्रुत्यंतर भावी यः स्निग्धोश्ष्नुरणनात्मकः, स्वरो रंजयति श्रोतृचिव्त स स्वर उच्चयते तथा राग के लिये ''योश्ष्यंध्वनिविशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषितः, रंज्जकों जन चित्ताना सः रागः कथितौ बुधैः'' आदि परिभाषाएँ दी गयी है। इनसे यह विदित होता है कि स्वर में स्निग्धताः, अनुरणन, प्रकाशमान, स्पष्ट व रंज्जकता निहित है और इन्हीं विशेषताओं युक्त स्वरों से राग की रचना होती है। स्वर रंज्जक होने के कारण स्वतः ही आनंददायी होते हैं। ये स्वर ही राग संगीत का स्रोत हैं अतः हम कह सकते हैं कि संगीत कला की नींव है सौन्दर्यतत्व पर आधारित है। संगीत में निहित रंज्जक तत्व ही सौन्दर्य का प्रतीक है। राग रचना में आरोह–अवरोह के रूप में ली गयी अनेक स्वर संगतियों में 'काकु' प्रयोग के साथ मधुर ध्वनि प्रवाह, स्वरात्मक लय तथा लयात्मक स्वर आदि ही मिलकर संगीत का निर्माण करते हुए उसमें निहित सौन्दर्य तत्व का श्रृव्य रूप में अनुभव कराते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि स्वर व लय की विशिष्ट संयोजना द्वारा ही संगीत में सौन्दर्य का जन्म होता है।

भारतीय परम्परा में ऋग्वेद में सौन्दर्य को 'श्री' नाम से सम्बोधित किया गया है, इसके अतिरिक्त 'श्रिय' श्रेष्ठ आदि शब्दो का भी प्रयोग मिलता है। अमर कोष में सुन्दर शब्द तथा उसके अनेक पर्याय शब्द मिलते हैं।

यथा–

''सुन्दर रूचिरं चारू, सुषमं, साधु, शोभनम्।
कान्त, मनोरम्, रूच्यं मनोज्ञं, मंजु, मंजुलम,
अभीष्टेभीप्तिं, हदयं, दयितं, वल्लभं, प्रियंम्।''

इसके अतिरिक्त ललित, सुष्ठु काम्य, कमनीय, दिव्य आदि शब्दों का भी प्रयोग 'सौन्दर्य' शब्द के पर्याय के रूप में किया गया है।

अंग्रेजी में सौन्दर्य का वाचक शब्द है– Beauty, Beauty का अर्थ है "Any of those attributes

of form, sound, colour, execution, character, behaviour etc. which give pleasure and gratification to the senses or to the mind, a person or thing possessing this" (आकृति, रूप, ध्वनि, रंग, प्रस्तुतिकरण, चरित्र, व्यवहार आदि जो इन्द्रियों अथवा मन को आनंद तथा संतोष प्रदान करें अथवा ऐसे गुण से सम्पन्न कोई व्यक्ति अथवा वस्तु)।

ललित कलाओं में निहित सौन्दर्य का तात्विक विवेचन करने तथा उसके आधार पर सिद्धांतो का निरूपण करने हेतु ही 'सौन्दर्यशास्त्र' (Aesthetics) की व्युप्पत्ति हुई तथा इसे एक षास्त्र के रूप में मान्यता प्रदान की गयी। Aesthetics का शाब्दिक अर्थ है "The Science of the Beauty in art and nature" अर्थात कला व प्रकृति के सौंदर्य का विज्ञान या शास्त्र। इससे पहले पाश्चाव्य परम्परा में सौन्दर्य का विवेचन दर्शन की एक शाखा के रूप में होता था।

भारतीय सौंदर्य दर्शन मूलतः अध्यात्मिक है। सौन्दर्य शब्द की चर्चा करते हुए सत्यं, शिवं, सुंदरम् व सच्चिदानंद शब्द सहज ही सामने आते हैं। सत्यं, शिवं, सुंदरम् व सच्चिदानंद के गुण है इसमें सुंदरम् का स्थान सबसे आगे हैं। सुन्दरम् के अन्तर्गत ही सत्य एवं शिव का समागम है। जो सुन्दर है उसका अस्तित्व है, वहीं 'सत्य' है, सुन्दरम् में आनंद प्रदायनी क्षमता हैं, जो आनंददायी है वो स्वतः ही कल्याणकारी हैं। यही 'शिव' है। सुन्दरम् की अनुभूति ही आनंद की अनुभूति है संगीत कला जब अपने सूक्ष्म सौंदर्य से श्रोताओं को अवधानमग्न और तन्मय कर देती है तभी परम् सुन्दरम् की स्थिति आती है और परमानंद की अनुभूति होती है। विविध भावों से परे इसी सर्वोत्कृष्ट सौन्दर्यानुभूति की परमानंद अवस्था को ही, आचार्य अभिनवगुप्त ने रसानुभूति का 'चरम तल' तथा आचार्य विश्वनाथ ने 'ब्रहमानंद सहोदर' कहा है।

भारतीय परम्परा में 'रस' को सौन्दर्य का पर्याय माना गया है। रस का सम्बन्ध आनंद से है ललित कलाओं की विशेषता है आनंद प्रदान करना। कला द्वारा निर्मित रस प्रकृति द्वारा उत्पन्न पदार्थों के रस से भिन्न है।

सभी कलाओं में कलाकार के हदय में अपनी कला के प्रति एक पवित्र भावना होती है जो आध यात्मिकता से परिपूर्ण होती है। प्रत्येक कला का उद्देश्य आत्मोन्नति, मोक्ष प्राप्ति, सामाजिक उत्कर्ष तथा लोकरंजन से जुड़ा होता है। आत्मोन्नति एवं मोक्ष प्राप्ति को कला का लक्ष्य मानने से उसका संबंध स्वतः ही मानव के उस आत्मिक एवं मानसिक बल से जुड़ जाता है यही कारण है कि कला को विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम कहा गया है। भारतीय परम्परा में सौन्दर्यानुभूति ही रसानुभूति है अभिव्यक्ति के स्तर पर सौन्दर्य तथा अनुभूति के स्तर पर आनंद। रस, श्रृंगार, हास, करूण, शोक आदि ही नहीं बल्कि भयानक रौद्र, अद्भुत, वीभत्स आदि रसों से युक्त आदि मानसिक विचारों को भी 'भय' के घेरे से दूर रहकर उनका रसास्वादन सौंदर्यात्मक रूप में कराता है। जैसे संगीत कला में करूण भाव के प्रस्तुतीकरण में कलाकार स्वयं पीड़ित नहीं हो उठता वरन विभिन्न अलंकार एवं संगीत के घटको, काकु प्रयोगों द्वारा आलाप बन्दिश आदि को इस प्रकार भावों से ओतप्रोत कर देता है कि सहदय श्रोताओं को भी कलाकार की मानसिक स्थिति के साथ तादात्म्य होने के कारण उन्हें भी एक समान भावानुभूति होती है। तादात्म्य होने की यही अवस्था रसानुभूति अथवा सौन्दर्यानुभूति है। सभी प्रकार के विचारों और उनके लिए निमित्त रसों का आस्वादन कराने की क्षमता एक कुशल कलाकार में होती है। उसका कारण यह

है कि कलाकार सहनशील व सह्रदय होने के कारण प्रत्येक वस्तु व्यक्ति या कथन की गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है। स्वार्थपरता से दूर रहकर आत्मा का ब्रह्मा की सिद्धि में एवं वास्तविकता में विश्वास रखते हुए, बहिरंग के साथ अंतरंग को भी जांचता परखता है तथा बिना किसी की परवाह किए निरसंकोच मुक्त रूप से भावभिव्यक्ति करता है और इस प्रकार हर तरह से मानसिक विचारों भावों व रसों का अनुभव कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक रूप में स्वयं भी करता है व दूसरों को भी कराता है।

सौन्दर्य की उपलब्धि अंतः और बाहय दोनों ही कारणों से मानी जा सकती है यह आवश्यक नहीं है कि कोई सुंदर वस्तु सभी को सुन्दर प्रतीत हो। सौन्दर्य अनुभवनिष्ट भी हो सकता है। कमल अथवा गुलाब का फूल, नदी का कल–कल कर बहना, झरने का गिरना सभी को सुंदर लग सकता है किन्तु मानवीय भावनाओं के आधार पर देखा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति को अपना आराध्य देवी देवता, प्रत्येक माँ को अपना बालक एवं प्रियजन रूपवान अथवा कुरूप होने पर भी सुन्दर प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ प्रेम ही प्रधान भाव बनकर सौन्दर्य का अनुभव करा देता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सौन्दर्य केवल वस्तु का गुण नहीं है बल्कि मानसिक प्रतीति भी है।

विद्वानों ने सौंदर्य का संबंध रस के साथ जोड़ते हुए उसे आनंद का मूलभूत तत्व बताया है रस निष्पत्ति के लिए संवेगात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में संगीत की प्रमुख भूमिका रहती है सौन्दर्यानुभूति के निर्माण में माधुर्य ओज एवं प्रसाद इन तीन गुणों का समावेश रहता है माधुर्य– मिठास, कोमलता एवं प्रेम की भावना से ह्रदय को कोमल एवं द्रवित करने वाला, ओज–वीरता व शूरता की भावना भरने वाला तथा प्रसाद–मोहक स्पष्ट, सरल व शाँतचित्त की भावना को व्यक्त करने वाला है, इनके अन्तर्गत ही संगीत के माध्यम से सूक्ष्म या स्थूल रूप में अभिव्यक्ति की अनेक सुंदर धाराएँ प्रवाहित होती हैं।

ललित कलाओं को सौन्दर्य का साक्षात स्वरूप कहा गया है। ये आनन्दात्मक होने के कारएण ऐन्द्रिय सुख के साथ मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक सुख भी प्रदान करती है। ललित कलाओं की अभिव्यक्ति से जो रस उत्पंन होता है उसे कलात्मक अनुभूति कहा गया है। कलात्मक रचना द्वारा रस की प्राप्ति मानवीय सृष्टि एवं प्रयत्नों का फल है। ललित कलाएँ सौन्दर्याभिव्यक्ति का वो माध्यम है जो अलौकिक आनंद प्रदान करती है।

भावों की अभिव्यक्ति में अन्य कलाओं की अपेक्षा संगीत कला का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। संगीत मात्र ध्वनि के सुन्दर संयोजन द्वारा ही सभी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति में सक्षम है। ध्वनि जब स्थिर नियमित स्पष्ट, मधुर एवं संगीतोपयोगी हो जाती है तब वह स्वर में परिणित हो जाती है। स्वर के शुद्ध तथा विक्रत दोनों ही रूप संगीत में सौन्दर्याभिव्यक्ति में सहायक होते हैं। रांग भारतीय संगीत की अनुपम निधि है। राग स्वर वर्ण से अलंकृत विषिश्ट स्वरावली है जो रंज्जक तथा आनंद प्रद है। राग में सौन्दर्य के अनंत रहस्य निहित है। एक राग अनेक बार सुनने पर भी सुन्दर एवं मनोहारी प्रतीत होता है। राग भारतीय संगीतज्ञों की सुविकसित, परिष्कृत, सूक्ष्म सौन्दर्यभावना का प्रतीक है। राग का स्वर वर्ण से विभूशित 'ध्वनिविशेषस्तु' अंग उसके रूप सौंदर्य से संबंधित है तो उसका 'रंज्जकत्व' तत्व अंतः सौन्दर्य से संबंधित है। राग के विस्तार में स्वरों के विविध लगाव, आलाप तान, वादी, संवादी, विवादी स्वरों का उचित संयोजन, कण, मुर्की, मीड़, खटका, गमक आदि अलंकरणों का प्रयोग, राग भाव के अनुसार ताल का सही निर्धारण तथा उचित लयों का प्रयोग उसके सौन्दर्य वृद्धि में सहायक होते है। इस प्रकार स्वर

लहरियों की अविरलता तथा स्वर, ताल, लय का अपूर्व संयोजन ही संगीत का सौन्दर्य आदर्श है जो सुनने वाले को विशिष्ट आनंदानुभूति कराता है। यही सौन्दर्यानुभूति है। कलाकार द्वारा जब किसी राग की अवतारणा की जाती है तो कलाकार, कलाकृति एवं श्रोता इन तीनों के बीच एक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। गायक अथवा वादक अपनी कल्पना के सहारे रचना को सुन्दर स्वर लहरियों से सवारता है तथा विस्तारित करता जाता हैं तथा श्रोता अपनी मनःस्थिति के अनुसार उसका रसास्वादन करता जाता है। कलाकार की भावाभिव्यक्ति तथा श्रोता की भावानुभूति की इस प्रक्रिया के बीच में 'सौन्दर्य' अपना स्थान बना लेता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि कलाकार के अन्तर्मन में स्थित सौन्दर्य की कल्पना का बाहय सौन्दर्य के साथ सामंजस्य, निर्मित कलाकृति में उस सौन्दर्य का आर्विभाव तथा श्रोता के मन में सौन्दर्य का अनुभव इन तीनों (कलाकार कलाकृति तथा सहृदय) के समन्वित रूप में ही सौंदर्य निहित है। कलाकार अपनी कलाकृति द्वारा आनंद एवं वेदना दोनों प्रकार के भावों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। कोई श्रृंगारिक अथवा शांत रस से परिपूर्ण रचना यदि श्रोता के मन को आनंदित करती है उतना ही आनंद कोई विरह गीत या करूण रस से परिपूर्ण रचना भी प्रदान कर सकती है। उचित स्वर सन्निवेश भावों के अनुसार काकु प्रयोग श्रोता के चित्त को आल्हादित करने की क्षमता तथा कल्पना का प्रयोग किसी भी रचना को हृदयग्राही बना सकता है। संगीत रचना के बाहय तथा आंतरिक दोनों स्वरूपों को उभारना व श्रोताओं को स्वर लहरियों के सागर में विहार कराना ही यदि कलाकार का लक्ष्य हो, और वह इसमें सफल हो तभी सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से वह उत्कृष्ट कला कही जा सकती है।

वाद्य संगीत पदविहीन होने के उपरांत भी स्वरों के सुनियोजित एवं सुन्दर संयोजन के कारण आनंदानुभूति के एक विशिष्ट वातावरण का निर्माण कर देता है। श्रोतागण तन्मय होकर उस वातावरण में विशेष सौन्दर्यात्मक तत्वों के निहित होने के कारण उसका रसास्वादन करने को बाध्य हो जाता है। यही सौन्दर्यात्मक तत्व कला को 'सत्य' ब्रह्म या मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाते हैं। श्रोताओं की तन्मयता ही इस बात की घोतक होती है कि उस समय श्रोता अचेतन होते भी चेतन तथा निष्क्रिय होते भी सक्रिय रहता है। श्रोताओं को आनन्द के चरमोत्कर्ष तक ले जाने वाला यही भाव सौन्दर्य के शास्त्रीय लक्ष्णों से युक्त माना जा सकता है। इन लक्षणो के अन्तर्गत, सम्मात्रा (Symmetry), संगति (Harmony), संतुलन (Balance), सुव्यवस्था (Order), विविधता (Variety), औचित्य (Propriety), स्पष्टता सौम्यता (Simplicity) आदि अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। संगीत कला में सौन्दर्य के शास्त्रीय नियमों लक्षणों के पालन से, सौन्दर्य उपादानों के समुचित प्रयोग से, कलाकार की सुन्दर एवं सफल अभिव्यक्ति से, अनुकूल वातावरण में, श्रोता के सहृदय एवं ग्रहणशील होने पर संगीत कलाकृति से जो विलक्षण आनंद की अनुभूति होती है वही सौन्दर्यानुभूति है। संगीत कला से प्राप्त आनंद मूलतः विशुद्ध ही होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सौन्दर्य
2. भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान
3. भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका
4. कलाबोध एवं सौन्दर्य
5. भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सौन्दर्यशास्त्र
6. संगीत निबंध संग्रह
7. सौंदर्य, रस एवं संगीत